तब्लीगी जमात और गोदी मीडिया का फेक न्यूज का धंधा

देश के कथित राष्ट्रीय मीडिया ने निजामुद्दीन की घटना के आड़ में फैलाया जहर

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

नई दिल्ली: कोरोना वायरस फैलने के दौरान निजामुद्दीन में मुसलमानों के तब्लीगी जमात के जाहिलपने के सारे तथ्य, सबूत सामने आने, पुलिस में एफआईआर दर्ज होने के बावजूद इसकी आड़ में समुदाय विशेष को टारगेट करने का खेल जानबूझ कर चलाया जा रहा है। सोशल मीडिया पर तब्लीगी जमात के खिलाफ गुरुवार को एक वीडियो जारी किया गया, जिसमें बताया गया कि थाने में ले जाया गया तब्लीगी जमात का एक युवक पुलिस वालों पर थूक रहा है। इस वीडियो का इतना प्रचार हुआ कि इसे बिना पुष्टि किए तमाम मुख्यधारा के टीवी चैनलों और समाचारपत्रों ने प्रकाशित कर दिया। लेकिन शुक्रवार शाम को इस वीडियो की हकीकत तब सामने आ गई जब खुद ही टीवी चैनलों ने बताया कि वो वीडियो तो फर्जी था। वो किसी और घटना का था। लेकिन इसके बावजूद न तो किसी टीवी चैनल ने और न ही किसी समाचारपत्र ने इस कुकृत्य के लिए माफी मांगी।

इस वक्त देश ही नहीं पूरी दुनिया मिलकर कोरोनॉ से लड रही है लेकिन हमारा देश इस वक्त फेक न्यूज प्रोपगेंडा से लड़ रहा है, मानो कोरोना सोच रहा हो की हमारा कोई वजूद ही नहीं, हम हल्के में ले रहे है कोरोना को या फिर पहले हम आपस में लड़कर मर जाए।

अंताक्षरी खेलकर टाइम पास कर रही मीडिया को तीन दिन से लगातार एक मुद्दा मिला हुआ है, "तब्लीग जमात" इस नाम ने जर्नलिजम में खलबली मचाई हुई है। तब्लीग जमात पर आरोप लगाया गया कि उन्होंने देश में बढ़ रहे संक्रमण को फैलाने में हवा दी है , लेकिन कल आजतक न्यूज रूम से उसके पलट में एक वीडियो प्रकाशित किया गया और उसमे उलटे पुलिस को दोषी बनाया गया।

गाजियाबाद के आसोलेशन वार्ड में रह रहे तब्लीग जमात के लोगो पर सीएमओ ने आरोप लगाते हुए तहरीर दी थी की उन्होंने नर्सों के साथ अभद्र व्यवहार किया। उनके अनुसार तब्लीग जमात के सदस्य बिना पेंट के घूम रहे थे। और अश्लील गाने सुन रहे थे एवं नर्स से बीड़ी सिगरेट मांग रहे थे।

रिपोर्ट दर्ज कराने पहुंचे ष्ट्रस्ह्र से सीसीटीवी फुटेज से सुबूत माँगा गया है, इसपर सीएमओ साहब खेल गये हैं, और उलूल जलूल तर्क दे रहे हैं।

गाजियाबाद के तब्लीग जिम्मेदार ने कहा है कि अगर सुबूत नहीं दिखाई गई तो ष्ट्रस्ह्र पर मानहानि का मुकदमा दायर कराएंगे। जिसका परिणाम बहुत ही घातक होगा क्योंकि तब्लीग जमात की रेपुटेशन सिर्फ इण्डिया ही नहीं बल्कि दुनिया के लगभग हर देश में हैं।

भारतीय मीडिया को इसके अलावा कुछ और दिखाने का मौका नहीं मिल रहा था लेकिन अब देश का बहुसंख्यक मीडिया से पूछ रहा है कि अगर कोरोना संक्रमण का कारण तब्लीग है तो तब्लीगी जमात के लोगो में संक्रमण कहा से आया ? आपने संक्रामित लोगो को देश में आने ही क्यों दिया।

मौलाना का फर्जी फोटो

निजामुद्दीन में तब्लीगी जमात का कार्यक्रम आयोजित करने में जैसे ही उससे जुड़े मौलाना साद का नाम सामने आया और एफआईआर दर्ज हो गई तो सवाल उठा कि मौलाना साद की फोटो कैसे मिले। मुख्यधारा का तथाकथित राष्ट्रीय मीडिया कैसे काम करता है, यह घटना उसकी मिसाल है। जितने भी चैनल थे, जितनी भी न्यूज वेबसाइटें थीं, जितने भी अखबार थे, उन्होंने मौलाना सज्जाद नोमानी की फोटो इंटरनेट से उठाई और उन्हें मौलाना साद बताते हुए चेप दिया। यह हरकत अगर किसी एक मीडिया वाले ने की होती तो गनीमत थी लेकिन सारे चैनल, अखबार और वेबसाइटें इस हमाम में नंगे हो गए। सिर्फ उर्दू अखबारों ने मौलाना साद का सही फोटो छापा था।

अगले दिन मौलाना सज्जाद ने भारत में अपने लाखों अनुयायियों को वीडियो संदेश जारी किया कि किस तरह देश के मीडिया ने उनकी फोटो मौलाना साद की जगह छापकर उनकी छवि को खराब करने की कोशिश की है। उन्होंने इसकी कड़ी निंदा करते हुए कहा कि उनके सारे अनुयायी ऐसे टीवी चैनलों, कथित राष्ट्रीय समाचारपत्रों और न्यूज वेबसाइटों का बहिष्कार करें।

यह वीडियो सामने आने के बावजूद किसी भी मीडिया हाउस ने मौलाना सज्जाद नोमानी से माफी नहीं मांगी।

मजेदार बात यह है कि मौलाना सज्जाद प्रधानमंत्री मोदी समर्थक मौलाना माने जाते हैं। क्योंकि मोदी ने जैसे ही देश में 21 दिन के लॉकडाउन की घोषणा की थी, मौलाना सज्जाद ने इसका स्वागत करते हुए कहा था कि अगर भारत की जनता को कोरोना से बचाना है तो हमें लॉकडाउन का समर्थन करना चाहिए। लेकिन मौलाना को अब मोदी समर्थक गोदी मीडिया ने जो झटका दिया है, मौलाना उसे जिंदगीभर नहीं भूल पाएंगे।

इन्हीं मौलाना सज्जाद नोमानी के खिलाफ काफी दिन पहले मोदी के पिट्ठू पत्रकार रजत शर्मा के टीवी चैनल इंडिया टीवी ने बाकायदा एक ऐसी घटना को लेकर मौलाना नोमानी को फसादी मौलाना बता दिया था, जिस घटना से उनका दूर दूर तक कोई संबंध नहीं था।

कैसे बेनकाब हुई हरियाणा की बबीता फोगाट

हरियाणा के कुछ खिलाड़ी इस इंतजार में रहते हैं कि कब कोई घटना हो और वे आरएसएस और भाजपा को खुश करने का मौका लपक लें। पहलवान बबीता फोगाट को यह मौका निजामुद्दीन की घटना में दिखा और जल्द ही उन्हें इसमें मुंह की खानी पड़ी।

पहलवान बबीता फोगाट ने निजामुद्दीन घटना की कड़ी निंदा करते हुए एक ट्वीट किया। ट्वीट देखते ही देखते वायरल हो गया।

उन्होंने ट्वीट करते हुए लिखा कि फैला होगा चमगादड़ से तुम्हारे वहां, हमारे यहां तो जाहिल सूअ.. से फैल रहा है। इस ट्वीट के साथ बबीता ने निजामुद्दीन इडियट्स हैशटैग भी लगाया। देखते ही देखते करीब 27 हजार यूजर्स ने ट्वीट को रिट्वीट किया।

ट्वीट के बाद बबीता फोगाट ट्रोल हो गईं। ट्रोल के बाद फोगाट ने यह ट्वीट हटा दिया। यूजर्स ने फोगाट के ट्वीट को शर्मनाक बताते हुए कहा कि एक खिलाड़ी की तरफ से ऐसी ट्वीट की उम्मीद नहीं थी। फोगाट सिस्टर्स ने ऐसा कारनामा पहली बार नहीं किया। वो भाजपा और आरएसएस को खुश करने के लिए अक्सर ऐसा करती रहती हैं। हालांकि पिछले दिनों उन्होंने हरियाणा सरकार को लेकर कुछ विरोधी ट्वीट भी किए थे, लेकिन जब उनकी मांगें पूरी हो गईं तो उन्होंने अपना स्टैंड भी बद लिया।

अजीत डोभाल का मुस्लिम प्रेम

अजीत डोभाल भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार हैं। भाजपा के सत्ता में आने के बाद उनको प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) नियुक्त किया था। वैसे तो एनएसए का पद एक पक्की सरकारी नौकरी की तरह नहीं है। उनका काम सिर्फ़ प्रधानमंत्री को देश की सुरक्षा के मामलों में सलाह देना भर है। लेकिन अजित डोभाल की बात दूसरी है। वह न सिर्फ़ खुद जाकर घटनास्थल का मौका मुआयना करते हैं बल्कि खुद उच्च पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों को आदेश भी देते हैं। हालांकि ये उनके अधिकार क्षेत्र से बाहर है लेकिन फ़िर भी सभी अधिकारी उनके आदेशों का पालन करते हैं।

भाजपा के दुबारा सत्ता में आने व अमितशाह के गृहमंत्री बनने के बाद अजित डोभाल ज्यादा शक्तिशाली हो कर उभरे हैं। इस दौर में उनका मुस्लिम प्रेम कुछ ज्यादा ही सामने आया है। मुस्लिमों से जुड़ी हर छोटी बड़ी घटना से वो न सिर्फ़ जुड़े हैं बल्कि उस पर वही फैसले भी लेते दिखायी देते हैं। धारा 370 हटाने के बाद विदेशी राजनयिकों को कश्मीर घुमाने व उन्हें ब्रीफ करने का काम उन्होंने ही किया। उत्तर पूर्वी दिल्ली में मुस्लिमों के नरसंहार के बाद वहां का दौरा भी उन्होंने ही किया। उन्हीं के दौरे के बाद, लुटने-पिटने के बाद भी, मुस्लिमों पर ही मुकदमे बनाने का दौर पुलिस ने शुरू किया। उसके बाद ही गृहमंत्री ने दिल्ली पुलिस को दंगों को रोकने में उनकी विफलता के लिये लताड़ने की बजाय '36 घंटों में ही' उन पर काबू पाने के लिये उनकी पीठ थपथपाई। इसके बाद वो अभी 30 मार्च को निजामुद्दीन के 'मरकज' में गये जिसके तुरंत बाद पुलिस ने वहां कार्रवाई शुरू की व प्रैस ने मुसलमानों को देश में कोरोना के फ़ैलाव के लिये जिम्मेदार ठहराना शुरू किया। इससे पहले मज़दूरों के महापलायन और उनकी दुर्दशा के लिये मोदी को हर तरफ़ से गालियां सुननी पड़ रही थी। नोट करने की बात है कि देश का गृहमंत्री इन सभी घटनाओं के सीन से नदारद है जैसे उसकी कोई जिम्मेवारी ही न हो।

सभी घटनाओं में जिनमें मुस्लिम समाज पीड़ित हो लेकिन उसको पूरे देश में दोषी घोषित करना हो वहां अजीत डोभाल चमत्कारिक रूप से अवतरित हो जाते हैं। वे एक संविधानत्तेर संस्था के रूप में कार्य करते दिखाई देते हैं। क्या ये महज एक संयोग है ? या फिर अजित डोभाल भाजपा की मुस्लिम घृणा पर आधारित राजनीति के मुख्य योजनाकार व संचालक है ?

-अजातशत्रु

सम्पादक के नाम

ये चुनावी स्टंट नहीं है

कल वर्कर्स यूनिटी हेल्पलाइन के लोग झज्जर पहुंचे, फंसे हुए मजदूरों को मदद पहुंचाने। खेतों में खड़ी फसल देख कर मुझसे रहा नहीं गया। खांटी किसान परिवार से हूं। ये सब पहले भी बहुत किया है। कोरोना के समय में किसान अपनी साल भर की कमाई काटने में लगे हुए हैं। उनसे पूछा खाने पीने कि दिक्कत तो नहीं, जवाब था, इसी के लिए तो कर रहे हैं। ये खेतिहर मज़दूर हैं।

लौटते हुए रास्ते में पटौदी के पास आठ दस लड़कों का झुंड अंधेरे में रास्ता नापते मिला। रुक कर खैरियत पूछी, कुछ दाना पानी दिया। ये सभी बरेली के दलित लड़के थे, सभी 17-18 साल के। रेवाड़ी गए थे सरसों की कटाई के लिए। स्ष्ठ्वस्त्रश्र2ठ्ठ होते ही खाने पीने की दिक्कत आने लगी। हार कर पैदल ही निकल पड़े। ठेकेदार ने पैसे भी नहीं दिए। किसी के पैर में जूते नहीं थे। एक झोला और 400 द्यद्व का सफर, पास में एक नया पैसा नहीं। ना कोई सरकार की मदद ना कोई रुकने का ठिकाना। घर में बैठे अघाए लोग पूछ रहे हैं, क्यों निकल रहे हैं ये लोग ? इसका जवाब इन्हीं लड़कों ने दिया - तुम्हारे पास भी कुछ खाने को ना मिले तो ऐसे ही सड़क पर निकल आओगे।

जब हम आईएमटी मानेसर में कासन की ढाढ़ी पहुंचे जहां पचास मज़दूर फंस गए थे, वहां का हाल और बुरा था। 8*8 के एक एक कमरे में पांच पांच लोग। काम बंद, खाने को कुछ नहीं। वहां हमने कम्युनिटी किचेन यानी मजदूर रसोई, शुरू कराया।

लोगों ने बताया सरकार की ओर से कोई राशन पानी की मदद नहीं पहुंची, ना कोई अफसर, सरकारी मुलाजिम जवाब दे रहा है।

सरकारी विपदा के मारे ये लोग कहां से घड़ी घड़ी हाथ धोएं, सोशल दूरी रखें ?

- संदीप रौजी